International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 6 Issue I Ser. II || January 2017 || PP 71-73

चुनाव में युवा वर्ग की भूमिका

डॉ० अशोक कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर
राजनितिक विज्ञान राजकीय महाविद्यालय टप्पल अलीगढ़

सार

युवा वर्ग किसी भी राष्ट्र का भविष्य होता है जीसमें हमें उस युग का भविष्य साफ-साफ दिखाई पड़ता है। युवा वर्ग में इतना जोश रहता है कि किसी भी चुनौती को स्वीकारने के लिए तैयार रहते हैं। आज का नवयुवक अतीत का गौरव और भविष्य का कर्णधार होते हैं और इसी में युवा वर्ग की सच्ची सार्थकता भी है। हर देश की तरक्की में वहां के युवाओं का बड़ा हाथ होता है। हर क्षेत्र की भाति राजनीति में भी युवाओं के सक्रिय भागीदारी के अत्यंत आवश्यकता होती है। जहां तक दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत का सवाल है तो यहां के युवाओं का राजनैतिक भागीदारी पहले तो काफी कम रही हैं, किंतु भारत में होने वाले 16वीं लोकसभा चुनाव में युवाओं में खासकर काफी दिलचस्पी देखने को मिली है।

भारतीय युवा आज के समय में जल्द ही शासन में परिवर्तन देखना चाहता है जो इस देश की जनसंख्या का एक जिम्मेदार हिस्सा बनता जा रहा है। युवाओं को अपनी राय व्यक्त करने से डर नहीं लगता और ना ही उन्हें इससे होने वाले प्रभाव के परिणाम के असर का डर है। भारतीय लोकतंत्र के मौजूदा बारीकियों को समझना, उनकी सीमाओं के भीतर रहते हुए भी वह उनका तार्किक ढंग से उपयोग कर रहे हैं।

हमें आज के युवा वर्ग को लोकतंत्र का पांचवा स्तंभ माना जाना चाहिए, क्योंकि उनके वोट के बिना हम अपने भावी नेता का चुनाव नहीं कर सकते हैं। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में चुनावी प्रक्रिया जारी है, भारत का 2014 का आम चुनाव कई मामलों में अलग था क्योंकि इस चुनाव में युवा मतदाता बड़ी संख्या में वोट दिए। आम चुनाव में युवा मतदाता निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

अलग-अलग अध्ययनों के मुताबिक यह पता चलता है कि युवाओं ने कभी किसी भी राजनीतिक दल के पक्ष में जमकर वोट नहीं किया है, यह हकीकत कम से कम पिछले 5 आम चुनाव के दौरान साफ नजर आया है। युवा मतदाता हमेशा से विभिन्न राजनीतिक दलों में विभाजित होते रहे ह युवाओं का मत भी ठीक उसी प्रकार बट जाता है जैसे कि दूसरे वर्ग के मतदाता बटते हैं। भारत जैसे विशाल देश में भाषा, धर्म, जाति, संम्प्रदाय आदि के आधार पर कई तरह की व्यवस्थाएं भी पाई जाती हैं और युवा वर्ग भी काफी हद तक इन को विविधता को मद्दे नजर रखते हुए अपने मताधिकार का प्रयोग करते हैं।

आंखों में वैभव के सपने, मन में तूफान से उठते हुए परिवर्तन की ललकार, अदम्य साहस, स्पष्ट संकल्प लेने की चाहत का नाम युवावस्था है। दुनिया का कोई भी आंदोलन, दुनिया की कोई भी विचारधारा, युवा शक्ति के बिना सशक्त नहीं बन सकता, वास्तव में वह युवा शक्ति ही हैं जिसके दम पर किसी भी निर्माण या विध्वंस की नीव रखी जाती हैं। विश्व में भारत सबसे ज्यादा युवा आबादी वाला देश है। सन 2020 तक भारत की औसत आयु 29 वर्ष होगी, जबकि चीन की 37 वर्ष, अमेरिका की 45 वर्ष होगी। जनसंख्या के आंकड़ों के अनुसार भारत में 60 करोड 13 से 35 वर्ष की आयु के हैं, इस आंकड़े से स्पष्ट है कि भारत में कामकाजी व्यक्तियों की संख्या सबसे अधिक है। भारत के

समग्र विकास के लिए कामकाजी व्यक्तियों की जनसंख्या आवश्यक होती है, अतः भारत को युवा राष्ट्र कहा जा सकता है। भारत की जनसंख्या का लगभग 60 आबादी युवाओं की है जो कि देश के उत्थान में बहुत बड़ी भूमिका निभाते हैं। लोकतंत्र की परिभाषा हमारे देश में पूर्णतः साकार होती है। जब आम लोगों को पूरी स्वतंत्रता है चाहे वह अभिव्यक्ति की हो या धर्म या संस्कृति के साथ ही अपने मताधिकार प्रयोग का, पिछले कुछ वर्षों में भारत में आर्थिक और सामाजिक विकास स्तर पर अप्रत्याशित रूप से विकास हुआ बड़े पैमाने पर समाज में भेदभाव आदि की घटनाओं में सुधार हुआ है। समानता और अन्याय जैसे मुद्दों पर कार्यपालिका और न्यायपालिका के सकारात्मक रूख भारतीय लोकतंत्र की मान मर्यादा में चार चांद लगाते हैं। एक लोकतंत्र बहुमत की इच्छा शक्ति पर निर्भर करता है और भारत में आज युवाओं का बहुमत है। भारत के युवाओं का भारत को एक विकसित आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका है, युवाओं के सहयोग के बगैर भारत में सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और धार्मिक विकास की परिकल्पना साकार होना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन सी लगती है। देश के भविष्य की जिम्मेदारी सदैव उस देश के लोकतंत्र को होनी चाहिए जो कि भारत की आबादी का बहुत बड़ा हिस्सा युवाओं का है जो देश के लिए उम्मीद की किरण अपनी आंखों में सजाए हुए हैं। आज का युवा वर्ग सभी क्षेत्रों में अपनी बौद्धिक क्षमता के बल पर एक बेहतर भारत के साथ ही एक नई विश्व व्यवस्था को बनाने में अथाह परिश्रम करने से नहीं हटना चाहते हैं। 1947 के बाद से अब तक भारत में जितने भी आम चुनाव हुए उनमें जिस प्रकार का लोकतांत्रिक माहौल रहा है। भिन्न भिन्न मुद्दे वादे आधारित चुनाव लड़े गए, परंतु 2014 का लोकसभा चुनाव हटकर था जिनमें एक तरफ वह पार्टी थी जिसने आजादी के बाद से अब तक 60 वर्ष तक देश की सत्ता को अपने पास रखा था दूसरी तरफ भारतीय जनता पार्टी, जिसके पास 13 दिन 13 महीने और 5 वर्ष का कार्यकाल तक के नेतृत्व में कार्य करने का मौका मिला, इसी बीच भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेई ने परमाणु परीक्षण करके भारत को अपनी ताकत दिखाने का काम किया। 2014 का लोकसभा चुनाव युवा मतदाताओं का चुनाव था जीसमें भारत में मौजूदा 81 करोड़ मतदाताओं में से लगभग 15 करोड़ मतदाता ऐसे थे जिन्हें मतदान का पहला मौका मिला, जबकि 18 से 35 साल के युवा मतदाताओं की संख्या 47 थी। निर्वाचन आयोग द्वारा दी गई जानकारी के मुताबिक देश में कुल युवा मतदाताओं की संख्या 2014 में लगभग 40 करोड़ थी। गिरती जन्म दर के कारण ऐसा अवसर कई दशकों तक आने वाला नहीं है जिनमें 18 से 35 वर्ष आयु वर्ग के मतदाताओं को एक साथ इतनी बड़ी संख्या में मतदान के अधिकार का मौका मिलेगा। उत्तर प्रदेश में तो हर एक लोकसभा क्षेत्र में एक रिपोर्ट के मुताबिक भारत में युवाओं की राजनीति की ओर तेजी से रुझान बढा है, इनमें से बड़ी संख्या में युवाओं की है जो राजनीति में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं या निभाने की सोच रहे हैं। दिल्ली में आम आदमी पार्टी की जीत में भी युवाओं के सक्रिय भूमिका अहम रही हैं और उस पार्टी के सदस्य भी युवा वर्ग के ही हैं। एक आंकड़े के मुताबिक दिल्ली में आम आदमी पार्टी को अन्य पार्टियों के मुकाबले 17.18 फ़ीसदी वोट अधिक इसलिए मिले कि आम आदमी पार्टी ने अपने इस अभियान में युवाओं को राजनीति से जोड़ने पर अधिक जोर दिया था, जिसके बाद युवा सक्रिय रूप में काम करते नजर आए आम आदमी पार्टी ने प्रचार में भी नए प्रयोग किये। पार्टी ने सोशल मीडिया का व्यापक इस्तेमाल किया और युवाओं को बड़ी संख्या में जोड़ने में सफल रहे, इसी तरह अब अन्य राजनीतिक दल युवाओं को अपने पाले में खींचने में जुटे है। पार्टियों को राजनीति में युवाओं की बढ़ती भागीदारी का अंदाजा हो गया है और वह युवाओं के विभिन्न तरीके से आकर्षित करने में जुटे हैं। मौजूदा राजनीति को देखकर अब इस बात में कोई संशय नहीं है कि युवाओं की भूमिका को कोई भी राजनीतिक दल नजरअंदाज नहीं कर सकती है। युवा जिस भी राजनीतिक दल की ओर रुझान करेगा निश्चित ही उस दल को फायदा पहुंचेगा।

1974 के जेपी आंदोलन के समय भी छात्रों की अहम भूमिका सामने आई थी। जेपी आंदोलन के समय बिहार में छात्रों का आंदोलन संपूर्ण क्रांति के रूप में तब्दील हो गया था इसलिए युवा शक्ति को आज के नेता भली-भांति पहचानते हैं। इस बार ऐसा माना जा रहा है कि आगामी लोकसभा चुनाव में युवाओं को वोट डालने की तादाद बढ़ेगी। अभी तक युवा मतदाता अन्य आयु वर्ग के मुकाबले मतदान केंद्र तक कम संख्या में पहुंचते थे क्योंकि सरकार और अन्य एजेंसियां कालेज परिसर में व्यापक स्तर पर छात्र-छात्राओं को वोटर कार्ड बनवाने से लेकर मतदान केंद्र जाने और मत डालने के प्रति लोगों में जागरूकता फैलाने का पूरी तरह से प्रयास रत है। क्योंकि जब तक लोगों में जागरूकता नहीं फैलाइ जाएंगी तब तक युवा वर्ग वोट डालने के प्रति जागरुक नहीं होंगे, क्योंकि अब इस सोच में बदलाव आया है कि बड़े राजनीतिक पार्टियां भी अपने साथ ज्यादा युवाओं को जोड़ रही है अब हर दल इस बात को समझ रहा है कि युवाओं की उपेक्षा कर के आगे नहीं बढ़ सकता है इसलिए पार्टियां विशेष रूप से इस वर्ग पर ध्यान दे रही है। सभी पार्टियां अधिक से अधिक युवाओं से जुड़ने के लिए सोशल मीडिया का जमकर इस्तेमाल कर रहे है। नरेंद्र मोदी और राहुल गांधी जैसे बड़े नेता युवाओं से संवाद बढ़ाने के प्रयास कर रहे हैं और वही पर बड़े नेता कॉलेज यूनिवर्सिटी के छात्रों को संबोधित कर अपने लिए दूरदर्शन और अन्य संचार माध्यमो का इस्तेमाल कर रहे है। संभवत इस बार के चुनाव में ऐसा पहली बार होगा कि विभिन्न दलों के घोषणा पत्रों के लिए युवाओं के सुझाव भी शामिल किए जा रहे हैं। बीते कुछ सालों में दिल्ली में अन्ना हजारे के आंदोलन के समय युवा काफी सक्रिय रूप से भाग लिए थे, उसके बाद आम आदमी पार्टी में भी इनकी दिलचस्पी काफी बढ़ी है। कई नेता ट्विटर पर भी सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं और वे इसके जरिए अपनी बातों को लोगों तक पहुंचा रहे हैं, वहीं कांग्रेस ने अधिक से अधिक युवाओं को पार्टी से जोड़ने के लिए सोशल मीडिया का प्रयोग कर युवाओं तक अपनी पहुंच बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। आज युवाओं की सक्रियता सोशल मीडिया पर काफी होने की वजह से कैंपेन चला कर युवाओं को हर तरह से लुभाने का काम किया जा रहा है। इससे साफ स्पष्ट होता है कि इस बार भारतीय राजनीति की तस्वीर बदलने का सारा दारोमदार युवा वर्ग के ऊपर ही है या यूं कहें कि अगला प्रधानमंत्री देश के युवा ही निर्धारित करेंगे। सफल लोकतंत्र का नारा. श्सबका साथ सबका विकास मताधिकार हमारा अधिकार

सन्दर्भ ग्रन्थ.

1. https://www.pravakta.com/the-role-of-youth-in-the-victory-of-the-lok-sabha/
2. Anirban Banerjee, "Youth Participation in Indian Election", Society Today: an interdisciplinary journal of social science ISSN 2319-3328, December 2013.
3 राहुल कुशवाहा, भारतीय लोकतंत्र में युवाओं और मीडिया का बढ़ता वर्चस्वरू एक अध्ययन, इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल्स मल्टीडिसीप्लिनरी स्टडीज, अगस्त 2016।
4 भारत के युवा बदलेंगे भारत की तस्वीर, अभिषेक सुमन डॉट कॉम, 2014।